हिंदी ऑनलाइन कक्षा में आप सभी का स्वागत है|

कक्षा -8

हिन्दी

पाठ - 6

रामायण और महाभारत के महापात्र

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

पाठ प्रवेश-

माता पिता की सेवा से बढ़कर संसार में कुछ नहीं है,जिसने माता - पिता की सेवा कर ली उसने संसार में सब कुछ पा लिया । श्रवण कुमार का नाम मातृ - पितृ भक्ति के लिए सदा सम्मान से लिया जाता है।इतना ही नहीं गणेश,नचिकेता, भगवान राम,भीष्म जैसे पात्र भी अपने मातृ-पितृ भक्ति के लिए जाने जाते हैं। इसी प्रकार महाभारत के एक पात्र कर्ण को अपनी दानशीलता तथा मित्र भक्ति के लिए जाना जाता है।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

संबन्धित प्रश्न –

1.हमारे हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध ग्रन्थों का नाम क्या है?

2.महापात्र का अर्थ क्या है?

3.सेवा का अर्थ क्या है?

4.इस संसार में सर्वोउतकृष्ट सेवा किसे माना गया है और क्यों?

5.मातृ-पितृ भक्ति के कुछ उदाहरण दीजिए?

6.भगवान राम,श्रवण कुमार, भीष्म, नचिकेता आदी जैसे पात्रों से हम क्या सीखते हैं?

सामान्य उद्देश्य-

- छात्रों में माता-पिता की सेवा करने का भाव जार्गत करना।
- रामायण और महाभारत के पात्रों के बारे में जानकारी प्राप्त करना तथा उन पात्रों के आदर्श को ग्रहण कर उस मार्ग पर चलने केलिए प्रेरणा देना।
- बच्चों को महान व्यक्तियों के जीवन से परिचित कराना, ताकि वे भी महान बन सकें।

विशिष्ट उद्देश्य-

- सेवा और दान जैसे अच्छे गुण के बारे में छात्रों को जानाकारी देना।
- अहंकार जैसे गुण को त्याग ने के लिए प्रोत्साहन देना।
- कर्ण, श्रवण कुमार जैसे पात्रों के बारे में छात्रों को जानकारी देना।

सारांश-

संसार में जिसने माता - पिता की सेवा किया है उसने संसार में सबकुछ पा लिया। माता - पिता भगवान के दिए हुए सबसे अनमोल उपहार हैं।माता-पिता का प्यार निस्वार्थ होता है। और वे हमारी खुशियों के लिए अपनी खुशियों को त्याग देते हैं। श्रवण कुमार एक पौराणिक चरित्र है। उसके माता पिता अंधेरे थे। श्रवण कुमार अत्यन्त भक्ति भाव से उनकी सेवा करते थे। इस प्रकार महाभारत के एक पात्र कर्ण को अपनी दानशीलता और मित्र भक्ति के लिए जाना जाता है। जिसने माँगने पर अपना कवच और कुंडल दान कर दिया था और दुर्भाग्य के साथ मित्रता भी निभाई थी। इतना ही नहीं अन्त समर में रणभूमि में मृत्यु की प्रतीक्षा करते समय भी वे अपने दान देने से पीछे नहीं हटे। उस समय उनके पास ब्राह्मण को दान में देने के लिए कुछ नहीं था। उस समय उन्हें याद आता है ककि उनके एक दाँत सोने के थे। उसी क्षण वे पत्थर से उस दाँत को तोड़कर गंगा माँकका स्मरण कर उस पानी से दाँत को धोकर ब्राह्मण को दान में दिया। उस समय श्रीकृष्ण और अर्जुन अपने वास्तविक रूप में आए। श्रीकृष्ण उन्हें आशीर्वाद किया कि तीन लोक में वे दानवीर के नाम से जाने जाएगें। अर्जुन भी कर्ण की दानशीलता और धर्मपरायणता देख उनके सामने नत मस्तक हुए।

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP